[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3640

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंगों में समाहित चित्रकार विकास भट्टाचार्यजी की कलाकृतियाँ

Ruchika Shrivastava Research Scholar
H.N.B. Garhwal University

कला का इतिहास उतना ही पुराना है जितना की मानव का इतिहास। ऐसा कहा जाता है कि मनुश्य ने जिस समय अपने नेत्रों को खोला तब से ही वह अपनी आजीविका के लिये दिन प्रतिदिन नव निर्माण के कार्य में जुट गया और उसकी इस नव निर्माण प्रवृति ने उसके जीवन को रोमांचक, खुषहाल व समृद्ध बनाया है।

इस रोमांचकता, खुषहाली व समृद्धि को दर्षाने के लिये उसनें (मनुश्य नें) चित्रकला का सहारा लिया और उसे सही रुप में व्यक्त करने के लियें रगों को अपना साथी बनाया। उसने कहीं गहरे रंग तो कहीं हल्के रंगों का प्रयोग करके अपनी भावनाओं को देखने वालों के सम्मुख प्रस्तुत किया। रंग किसी भी व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते है। आधुनिक परिवेष में कलाओं ने मानव समाज को इस तरह प्रभावित किया है कि वह किसी भी प्रकार की कला के बिना अपने आपको अधूरा महसूस करता है वह कला फिर चाहे संगीत हो, लेखन हो, फोटोग्राफी हो या फिर चित्रकला ही क्यों न हो। आज के परिवेष में कुछ प्रकार से कलायें व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित व उजागर करने में सहयोग करती है। मेरे द्वारा लिखित षोध पत्र में चित्रण में रगों के प्रयोग से किस प्रकार के प्रभावों को दिखाया जा सकता है चित्रकार बिकास भट्टाचार्यजी जो फोटोयर्थाथ वादी चित्रकारों में गिने जाते है उन्होनें रंगों का किस प्रकार प्रयोग किया है यही विषय रहेगा।

रंगों में समाहित चित्रकार विकास भट्टाचार्यजी की कलाकृतियाँ – मानव जीवन में वर्ण का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक वस्तु कोई–न–कोई रंग लिये हुए हैं। वस्तुओं के धरातल में रंग होने कारण ही वह हमें दिखाई देती है। धरातलों पर प्रकाष की मात्रा कम या अधिक होने से एक ही रंग की वस्तुयें अलग–अलग दिखाई देती हैं।''[1] रंगों के प्रति मानव का आकर्शण कभी घटा नहीं है। अगर ध्यान दिया जायें तो हमारी जिंदगी इन्ही रंगो के साथ जूडी है। एक कलाकार इन्ही रंगों से अपने जीवन के उतार चठाव को दर्षक के सम्मुख प्रस्तुत करता है। कला जगत में बिकास भट्टाचार्यजी का प्रवेष 1965 में कोलकाता के नगर दृष्य (सिटी स्केप) से हुआ था जिस सीरीज की कृतियों ने नगर के कला जगत में भूचाल ला दिया। इन कृतियों में कोलकाता के निवासियों ने उन दृष्यों को देखा जिससे वे अनजान थे। उनका प्रिय नगर कोलकाता मर रहा था। उसके भव्य रूप विकृत हो रहें थे। भूख तंगी और दरिद्रता से पटी उसकी गलियाँ कोलकाता की भव्यता को मुँह चिढ़ा रही थी। इस सीरिज से बिकास भट्टाचार्यजी को पहचान मिली और कोलकाता को ही नहीं, भारतीय कला जगत को ऐसा यथार्थवादी कलाकार मिला जो उपेक्षित और अदृष्य जीवन को भी प्रत्यक्ष कर सकता था।''[2] कोलकाता की चमकती–दमकती दुनिया से इतर एक बदहाल और स्लम में बदलता कोलकाता के जीवन को उसकी समग्रता में अंकित करते बिकास चित्रकला में यथार्थ के जिन स्तरों को छूते रहे, वे बड़े डरावने रहे हैं।''[3]''बिकास भट्टाचार्यजी का कोलकाता दरअसल उत्तर कोलकाता है जहाँ की तंग गलियों, ऊँची और जर्जर होती जा रही इमारतों, भीड़–भाड़ आदि को''[4] उन्होनें अपने चित्रों में दिखाया है। कोलकाता के अधिकांष कलाकार यथार्थ और आकृतिमूलक कलाकृतियों का सृजन करते है। यही बात बिकास भट्टाचार्यजी की कलाकृतियों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। व्यक्ति – चित्रण में विकास ने अपनी दक्षता सिद्ध की है। उनकी रुचि फोटोग्राफिक यथार्थवाद में भी रही है। अति यथार्थवादी धारा एवं समकालीन भारतीय कला के अद्वितीय एवं महत्वपूर्ण चित्रकार हैं। वे अतियथार्थवादी दुनियाँ को अपनी चित्राकृतियों के माध्यम से बेहद प्रभावषाली ढंग से प्रदर्षित करते हैं। वे एक साधारण व्यक्ति चित्र को अनोखा बना देते हैं। उनकी चित्राकृतियाँ दर्षक के मन में बेचैनी उत्पन करती है। उनकी कला में बुरी खबर के साथ ही तकनीकी कौसल की अधिकता भी दिखाई देती हैं। फोटोग्राफी, चलचित्र, स्वप्न तथा फन्तासी के साथ ही उनकी कला में बचपन की दुखद स्मृतियों का भी समन्वय हुआ है। उनकी गुड़िया नामक चित्र श्रंखला में सिनेमा के समान नाटकीय कल्पनाओं का प्रयोग अपनी कलाकृतियों में पूर्ण रुप से किया है। उनकी यथार्थवादी कलाकृतियों में तीखा व्यंग भी छिपा होता है।''[5]1970 के आस– पास बिकास भट्टाचार्यजी भारतीय आधुनिक कला की दुनियाँ में अपनी प्रसिद्ध 'गुडिया श्रंखला' से अपनी एक अलग पहचान बना सके थे। कलाकार के स्टूडियो में कोई बिकास भट्टाचार्यजी को एक गुड़िया दे गया था इस आग्रह के साथ कि इसकी भवें पेंट कर देना। यह अकेली गुड़िया कलाकार के स्टूडियों में कई दिन तक पड़ी रही और एक दिन उसने अपना अनोखा, अद्भुत पेंटिग अवतार पा लिया। कोलकाता की सड़के, ऊँची, पुरानी और बड़ी इमारतें, गलियाँ, पुरानी छतें, पुराने फर्नीचर वाले कमरे और इस माहौल में एक अकेली गुड़िया की रहस्यमय उपस्थिति इस श्रृंखला को स्मरणीय बना देती है। इस माहौल में न लोग है, न कोलकाता का प्रसिद्ध ट्रेफिक है। गुड़िया की बस एक मार्मिक उपस्थिति है। वह षहर में उछाल दी गई है– गिरी पडी है, दबी पडी है, एक दिव्य उछाल उसे इस महासागर में एक अलग तरह की पहचान दे रही है। इस श्रृंखला का एक प्रसिद्ध चित्र राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय (जयपुर हाउस) में है। बडेरा आर्ट गैलरी की प्रदर्षनी

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

में इस श्रंखला के एक चित्र में गुडिया छत पर एक रस्सी के सहारे लटकी पडी है। वह अपने आप को जैसे किसी परह से गिरने से बचाये हुये है। वह कोलकता की छतों की इस दुनियां को देख रही है। जिसे बिकास भट्टाचार्यजी ने अपने चित्रों में प्रसिद्ध कर दिया है। कहा जाता है कि बिकास भट्टाचार्यजी जब कला के छात्र थे तो वह अन्य छात्रों की तरह चिड़िया घर या गंगा घाट जाकर स्कैच नही करते थे। वह पुराने कोलकता की गलियों, जर्जर होती इमारतों, रेलवे स्टेषनों के प्लेट फार्म पर जाकर अपनी कला की दुनियां को खोजते थे।''[6]

विकास भट्टाचार्यजी का कला सुपर या हाइपर रियलिज्म से भी जुड़ी रही है। सत्तर के दषक में पष्चिम में फोटो चित्रों की सीधी नकल की जा रही है। फोटो यथार्थवाद भी चित्रकारों को दरअसल कई दषकों से चमत्कृत और प्रेरित करता रहा है। बिकास भट्टाचार्यजी ने चूंकि पोर्ट्रेट पेंटिंग में कई कमाल दिखाये है इसलिए उनका रुझान यथार्थवाद के इस रुप में भी रहा है।''[7]बिकास भट्टाचार्यजी की कला में ''आकृति–मूलकता का प्राधान्य है। इसमें स्त्री–पुरुश तो हमारे आस–पास के होते हैं, पर उनका अंकन लाक्षणिक प्रतीकों में होता है। इन स्त्री–पुरुश की आकृतियों की षक्लें बिगड़ी दिखती हैं। आँखें, मुँह, नाक, और सिर कुछ विचित्र भाव लिए दिखाई देते हैं जैसे उनको हमारे समय ने बदषक्ल बना डाला है। यह आकृतियाँ जीवन–षून्यता का आभास देती हैं, मानो हमारी व्यवस्था ने इनका जीवन छीन लिया हो। यथार्थ की इस कला में हिंसा, संत्रास, तनाव और गहरा अपराधबोध है जो बिकास की अपनी कला का वैषिष्ट्य है।''[8]उन्होंने पारम्परीक प्रतीकों को तोड़ा, प्रचलित मिथकों को तोड़ा और उसमें नई युक्तियों को विन्यस्त किया स्त्री की छबियों को भी नए रूपों में ढालकर बिकास ने उनकी षक्ति और सामर्थ्य को पहचाना। उन्होंने पोर्ट्रेट भी बनाए तो उसमें भी यर्थाथवादी अंकनों से नई छवियाँ निर्मित हुईं।''[9]यह मदर टेरेसा की कृति सन् 1977 में चित्रकार बिकास भट्टाचार्यजी द्वारा कागज पर स्याहीं से व लकड़ी पर कोयलें से बनायी गयी है, यह चित्र बंगाल की षक्ति व एक सी मानवता को दर्षाता है। इस चित्र को बडी ही खूबसूरती के साथ चीनी स्याही से बनाया गया है।''[10]बकास भट्टाचार्यजी का रंग कौषल चमत्कारिक रहा। उनकी तुलिका कैनवस की सीमा को अतिक्रमण करती रही। सघन रंगों के संयोजन से लगातार विस्फोटक विशयों को उठातें बिकास भट्टाचार्यजी की कला यात्रा जिन–जिन पड़ावों से गुजरती रही, वहाँ अन्य बहुत से कलाकारों की पहुँच ही नहीं रही।''[11] अतः इस प्रकार से हम कह सकते है कि चित्रकार बिकास भट्टाचार्यजी ने अपनी बात दर्षको तक पहुचाने के लिये कलाकृतियों में रंगों का सहारा लेकर कलाकृतियों को बहुत सुन्दर व सजीव रुप में अंकन किया है।

पाद टिप्पणी :

शर्मा, एस0 के0, अग्रवाल, आर0 ए0 डॉ0 राठौर, मदन सिहं — *रूपप्रद कला के मूलाधार, इन्टरनेषनल पब्लिषिग हाउस, निकट*

आधुनिक भारतीय चित्रकला में अतियथार्थवाद, षर्मा पब्लिषिंन सं0– 59

जोषी ज्योतिश — *आधुनिक भारतीय कला, यष पब्लिकेषनस, ग ध्909ए चॉद मौहल्ला,*

भारद्वाज, विनोद — *कला का रास्ता, राज कमल प्रकाषन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण*

जोषी ज्योतिष — *आधुनिक भारतीय कला, यष पब्लिकेषनस, ग ध्909ए चॉद मौहल्ला, गॉधी नगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010, पृ0 सं0– 283*

भारद्वाज, विनोद — *कला का रास्ता, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण*

जोषी ज्योतिष — *आधुनिक भारतीय कला, यष पब्लिकेषनस, ग ध्909ए चॉद मौहल्ला,*

Mukhopadhyay Amit, — *http://www.thecityreview.com/s10sind.html Bikash Bhattacharjee 1940-2006, ECE Emami Chisel Art, Kolkata, published in 2009, page no 87-89*